1	श्रीधर्मशास्तर्नमस्करोम्यद्य ते पादारविन्दं शरणं हि मादृशाम् उच्छृङ्खलं मम पञ्चेन्द्रियं भवान पावनमार्गेण चालयेत् सर्वदा स्वामिन् शरणम् अय्यप्पा !	श्री धर्मशास्ता, मेरे जैसे लोगों का आश्रय आप है और आपके कमल चरणों में प्रणाम करता हूं। बिना नियंत्रण में रहनेवाले मेरे पंचेन्द्रिय को आप सही मार्ग पर ले जाइए।।
2	अय्यप्पसेवासमाजस्य स्यामहं नम्रः सदस्यश्चरन् धर्ममेव हि भूमौ तु क्लेशेन जीवतां प्राणिनां सेवने देहि मे शक्तिं दयानिधे स्वामिन् शरणम् अय्यप्पा !	में शबरीमला अय्यप्प सेवा समाजम का एक विनम्र सदस्य हूं, जो धर्म के आधार पर चलता है। हे दयानिधे, इस धरती पर पीड़ा में जीनेवाले हर प्राणी की सेवा करने की शक्ति मुझे प्रदान करें ।।
3	मारुतेर्मानसे भक्तिर्यथा तथा भूयादचञ्चला भक्तिश्च मे हृदि कर्मनिष्ठा वयं भूयास्म सेवकाः हृत्तटे दम्भविहीना भवेम च स्वामिन् शरणम् अय्यप्पा !	जैसे मारुती नंदन हनुमानजी के मन में भक्ति है, वैसे मेरे मन में भी आपके प्रति अचंचल भक्ति हो। हम कर्मनिष्ठ सेवक बनें और हमारे मन में थोड़ा सा भी अहंकार न पैदा हो ।।
4	भद्राणि द्रष्टुं सुदृष्टिं च देहि नः दोषापहाराय शक्तिं च देहि नः अय्यप्पतत्त्वस्य ज्ञानं हि देहि नः प्राप्नुयामो वयं शीघ्रं हि त्वत्पदम् स्वामिन् शरणम् अय्यप्पा !	हमें ऐसी दृष्टि दें कि केवल दूसरों की भलाई को ही देखें। समाज की जो गलतियां है उसको सुधारने का शक्ति हमें दे दीजिए। अय्यप्प तत्वों के ज्ञान हमें प्रदान करें। हम जल्द ही जल्द आपके चरणों में विलीन हो जाएं।।
5	जन्म प्राप्ता जनाः पुण्यभू भारते सुव्रतैर्देव ते सेवया निर्मलाः तामसभावं परित्यज्य सद्गतिं साधयेयुस्तत्र भूयास्म साधनम् स्वामिन् शरणम् अय्यप्पा !	इस पवित्र भारत में जन्म लिये सभी जन आपकी व्रत लेने से, आपकी सेवा करने से कलंकरहित बन कर तामस भाव त्याग करके सद्गति प्राप्त करें |इस कार्य में हम उपकरण बनें ।।
6	तत्त्वमसीति यज्ज्ञानं प्रकाशितं तन्मे हृदन्ते प्रकाशतां सर्वदा स्वार्थलोभादिभिर्बद्धं तु जन्म मे व्यर्थं न भूयाद् इतीह मे प्रार्थना स्वामिन् शरणम् अय्यप्पा !	‘तत्वमसि’ से जो ज्ञान प्राप्त होता है वह हमेशा मेरे मन में प्रकाशित रहे। मेरा इस जन्म कोई स्वार्थ एवं लोभ जैसे मोह के बंन्धन में व्यर्थं नही होना चाहिए। यही मेरी प्रार्थना है ।।